छत्तीसगढ़
की

# लोक कथाएं

भाग - 2

राज्य संसाधन केन्द्र, प्रौढ़ शिक्षा
इन्दौर, (म.प्र.)

# छतीसगढ़ की लोक कथाएँ

(भाग-2)

कोड नं. : 001 (II)

लेखक : जयप्रकाश मानस

संपादन : तारा जायसवाल

चित्रांकन : दीपक मालवी

संस्करण : प्रथम, जून 2006

प्रतियाँ : 2000

मूल्य : रु. 9.00

प्रकाशक : **राज्य संसाधन केन्द्र, प्रौढ़ शिक्षा**
**भारतीय ग्रामीण महिला संघ, म.प्र.**
महालक्ष्मीनगर, सेक्टर आर, इन्दौर-452 010 (म.प्र.)
☎ 2551917, 2574104 Fax_0731-2551573
**e-mail:** literacy@satyam.net.in
srcindore@dataone.in
**Web** : www.srcindore.org

मुद्रक : सिद्धार्थ ऑफसेट
81, रवीन्द्र नगर, इन्दौर (म.प्र.)
☎ 0731-2493745

# आमुख

साक्षरता अभियान एवं सतत शिक्षा कार्यक्रम के फलस्वरूप नव-साक्षर पठन पाठन की ओर प्रवृत्त हुए हैं । इन नवसाक्षरों के सतत अभ्यास के लिए रोचक एवं मनोरंजक सामग्री का निर्माण केन्द्र द्वारा निरन्तर किया जा रहा है। कथाओं की तरफ नवसाक्षरों का रुझान स्वाभाविक है। इससे उनका मनोरंजन होता है । साथ ही साक्षरता कौशल का विकास भी होता है।

**छत्तीसगढ़ की लोककथाएं भाग-2** पुस्तिका नैतिक मूल्य की कथाओं का संग्रह है। इसके लेखक **श्री जयप्रकाश मानस** हैं। पुस्तिका हेतु आकर्षक चित्रांकन **श्री दीपक मालवी** द्वारा किया गया है। संसाधन केन्द्र इनके प्रति हार्दिक आभार व्यक्त करता है।

आशा है, ये कथाएँ नवसाक्षरों को मनोरंजक लगेंगी। आपकी प्रतिक्रियाओं एवं अमूल्य सुझावों का सदैव स्वागत रहेगा।

**कुन्दा सुपेकर**

निदेशक

राज्य संसाधन केन्द्र,

प्रौढ़ शिक्षा, इन्दौर (म.प्र.)

# ऋतुओं का वरदान

ईश्वर अपने बनाए हुए संसार में अकेले घूम रहे थे। उसी समय झुरमुट में उन्हें एक आदमी दिखाई दिया। आदमी जैसे ही करीब आया, ईश्वर ने पूछा, 'कैसे हो?'

आदमी कहने लगा- 'यह क्या भगवन्! बारह महीनों गर्मी-ही-गर्मी है। मैं तो कोई भी फसल नहीं उगा पाता। सूरज

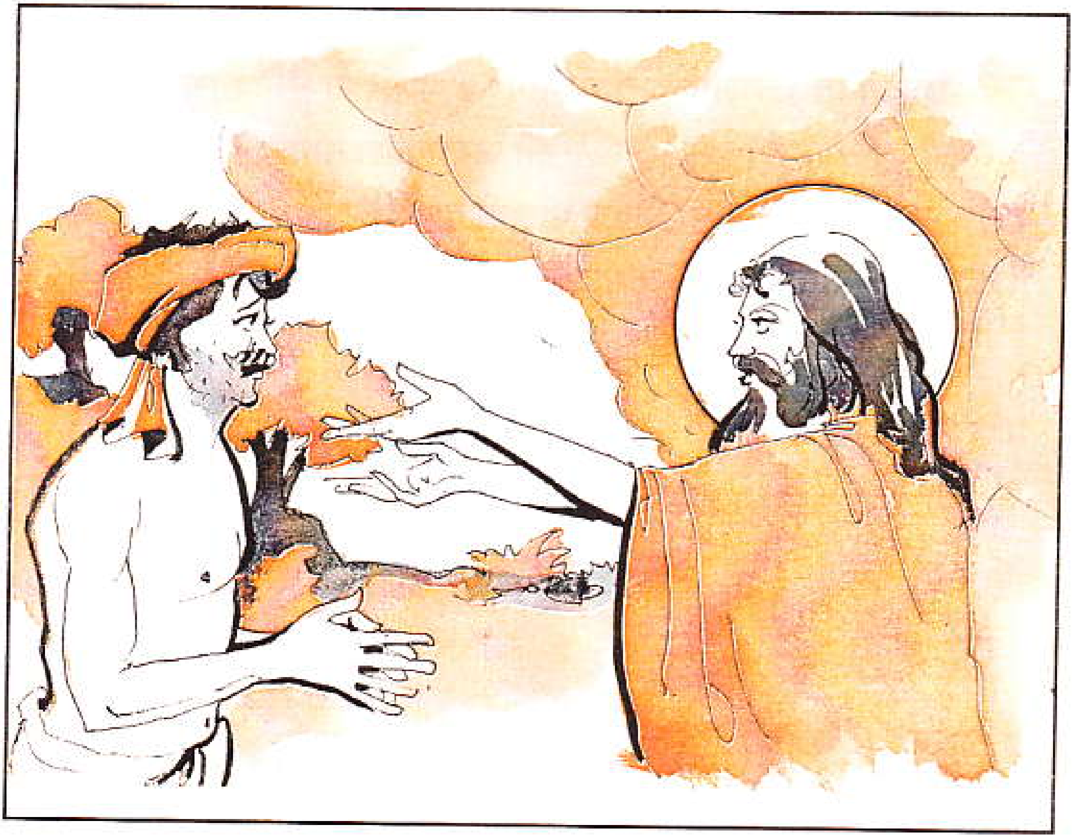

की आग से सभी फसलें चौपट हो जाती हैं। बरसात होती तो कितना अच्छा होता ?'

'तथास्तु ?' कहकर ईश्वर चले गए। अब बारहों महीने पानी गिरने लगा। एक साल बीतने के बाद ईश्वर पुन: प्रकट हुए। उन्होंने आदमी का हाल-चाल जानना चाहा।

आदमी ने गिड़गिड़ा कर कहा- 'मत पूछिए नाथ। जहाँ देखो पानी ही पानी। फसल तो चौपट हो ही गई। चारों ओर साँप-बिच्छू, कीड़े-मकोड़े ही घूमते रहते हैं। साल भर होने को आ गया, पेट में एक दाना भी नहीं पड़ा।'

'अब तुम्हें क्या चाहिए?' ईश्वर ने आदमी से पूछा।

आदमी ने ईश्वर के दोनों पाँव पकड़ लिए। उसने कहा- 'ठंड का मौसम हो तो ज्यादा अच्छा होता। खूब खाता-पीता और अपनी भूख मिटाता।'

ईश्वर फिर सहमत हो गए।

एक वर्ष बाद ईश्वर, आदमी का हाल-चाल जानने फिर आ पहुँचे। उन्होंने आदमी से वही प्रश्न दोहराया।

आदमी कँपकँपी के मारे जम गया था। बड़ी मुश्किल से कह सका 'बहुत गजब हो गया प्रभु ! मुझे बचा लो भगवन्।'

ईश्वर ने उसे स्वथ्य कर दिया और पूछा- 'बताओ तुम्हें अब क्या चाहिए ? तुमने जो भी माँगा मैंने दिया। आज तुम अन्तिम बार माँग लो, किन्तु जरा सोच-समझकर। कहीं तुम्हें और तुम्हारे परिवार वालों को पछताना न पड़े।'

आदमी ने चार-चार माह गर्मी, बरसात और ठंड माँगी। ईश्वर की बनाई ये तीनों ऋतुएँ आज भी मनुष्य का साथ दे रही हैं।

# चींटी का डर

कहते हैं- ब्रह्मा ने संसार की रचना की। उन्होंने पशुओं के लिए जंगल भी बनाया। जंगल में सैकड़ों पशु-पक्षी निर्भय होकर रहते थे। छोटे-छोटे पशु अक्सर हाथी के पाँवों के नीचे दब जाते थे। चींटियों की तो चटनी बन जाती थी। पक्षियों के घोंसले उजड़ जाते थे। कुल मिलाकर हाथी से लगभग सभी जानवर भयभीत थे। हाथी भी सब पर रौब जमाता फिरता था।

एक बार हाथी एक गाँव में जा पहुँचा। उस गाँव के बाहर एक बरगद का पेड़ था। पेड़ पर हरे-भरे नए पत्ते लगे हुए हैं। उस बरगद पर प्रतिदिन एक शिवभक्त जल चढ़ाता था। वह पेड़ की नियमित देखभाल करता था। पानी और शीतल छाँव के कारण पेड़ की जड़ में लाखों चींटियाँ सुख से रहती थीं। वे कभी भी शिवभक्त को नहीं काटतीं थीं।

हाथी को अपनी ताकत का बड़ा घमंड था। उसने सूँड से पूरे पेड़ को ही तहस-नहस कर दिया। वह पेड़ की हरी-हरी पत्तियाँ खाने लगा।

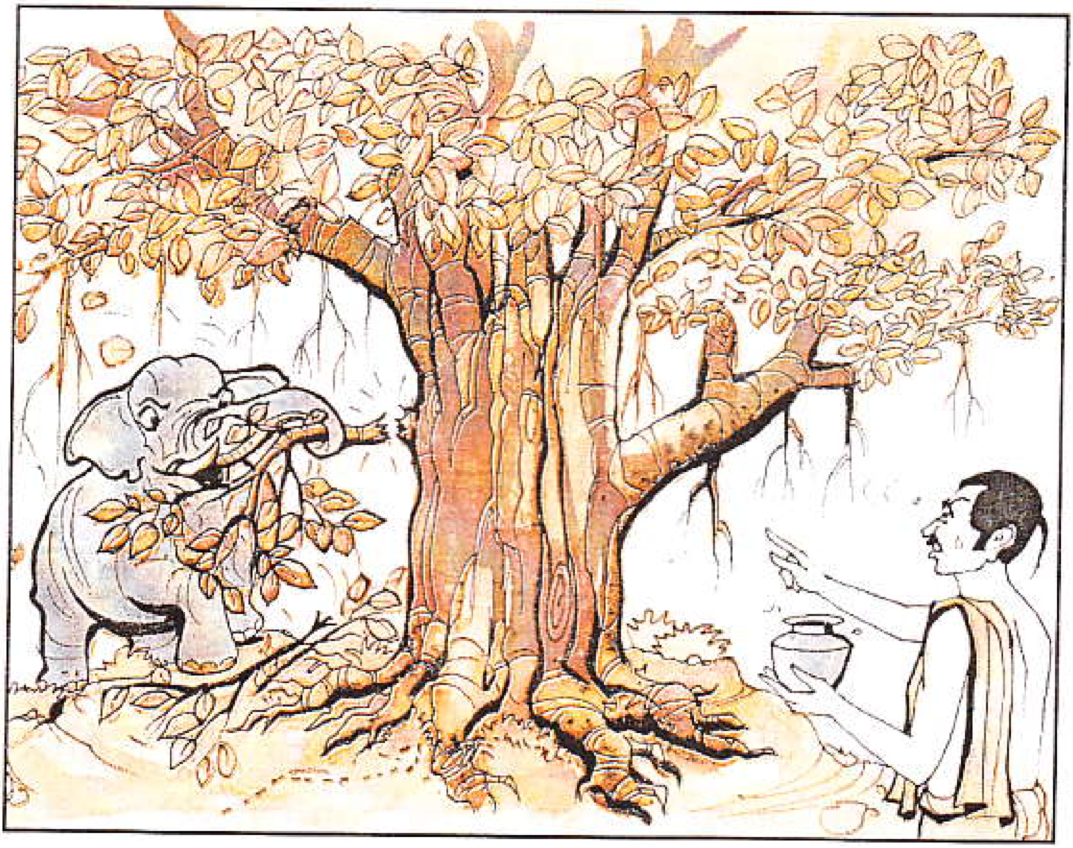

इतने में शिवभक्त वहाँ पहुँचा। पेड़ की हालत देखकर वह रो पड़ा। उसने हाथी को श्राप दिया- 'तुझे अपनी शक्ति का घमंड है न। आज से संसार के सबसे छोटे जीव चींटी से तुझे डरना पड़ेगा। टूट पड़ो चींटियों।'

बस क्या था। लाखों की संख्या में चींटियाँ हाथी की सूँड में घुसकर काटने लगीं। हाथी चीखता-चिल्लाता,

गिरता-पड़ता जंगल की ओर भाग गया। हाथी को आज भी सिर्फ चींटियों का भय सताता है। शायद इसीलिए वह धरती पर सूँड से फूँक मारे बिना बैठने की हिम्मत नहीं करता है।

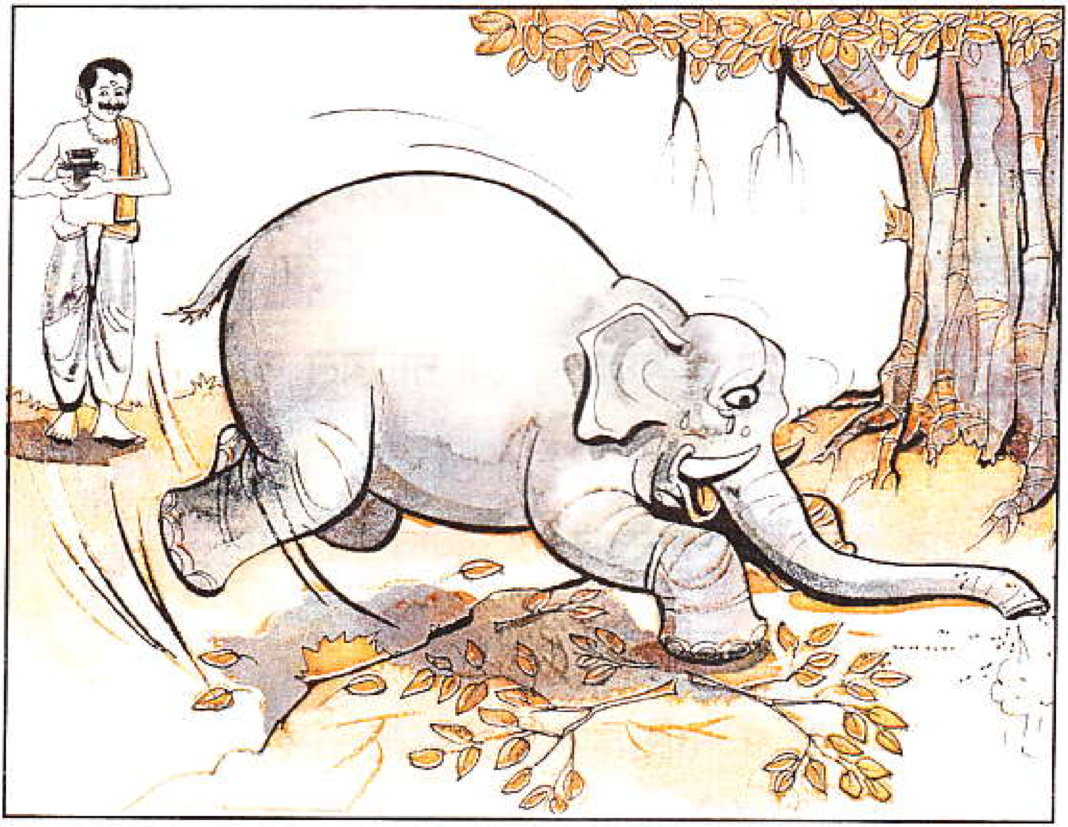

□

# नारियल का मूल्य

एक लालची व्यक्ति था। उसका नाम कुछ और था। उसे गाँव के सभी लोग **'लोभी बाबा'** कहते थे। 'लोभी बाबा' कहकर उसकी हँसी उड़ाते थे । उस पर इसका कोई असर नहीं होता था। लोभी बाबा एक बार बीमार हो गया। वह खर्च के डर से वैद्य से दवा खरीदना नहीं चाहता था। वह बैगा के पास गया। बैगा ने उसे एक नारियल लाने का हुक्म दिया । वह नारियल खरीदने दुकानदार के यहाँ जा पहुँचा।

उसने दुकानदार से पूछा - 'एक नारियल का कितना लोगे भाई?'

'आठ आने।' दुकानदार ने जवाब दिया।

'चार आने में नहीं दोगे ?'

' चार आने में नारियल लेना है तो तुम्हें बाजार जाना होगा। वहाँ चार आने में नारियल मिल जाता है।'

लोभी बाबा चिखली बाजार पहुँच गया।

उसने दुकानदार से पूछा-'नारियल का क्या दाम है?'

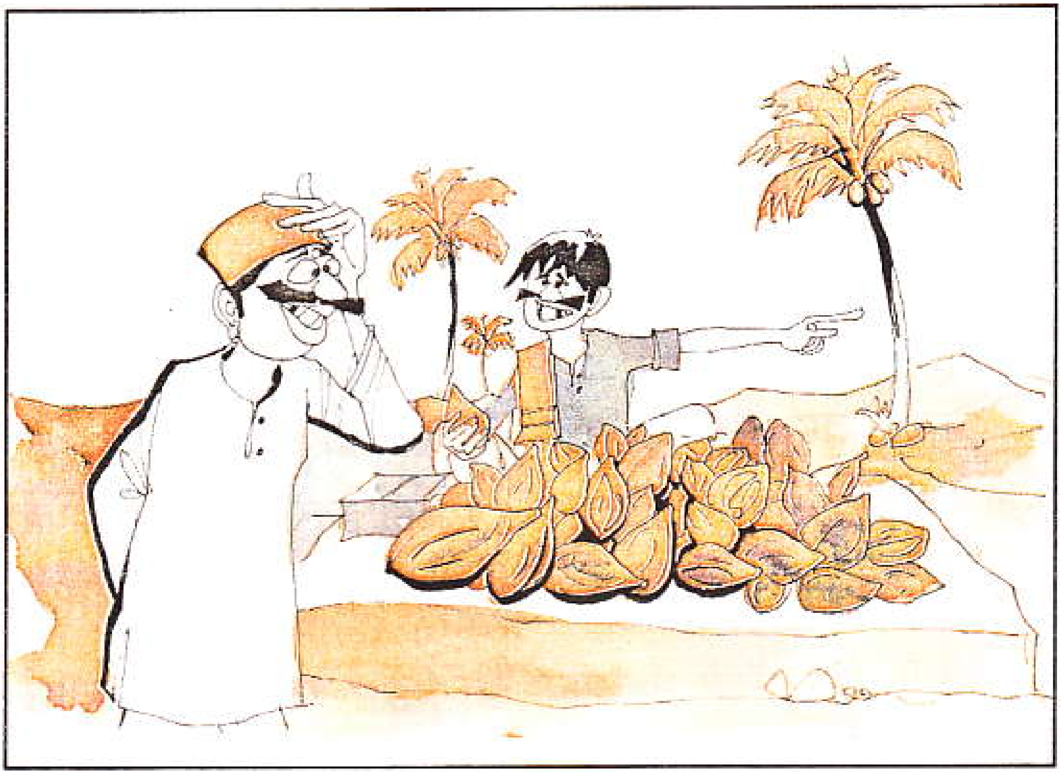

'चार आने दो बाबा।' - दुकानदार बोला।

'दो आने में नारियल दोगे क्या?' लोभी बाबा ने पूछा।

'बाबा दो आने में नारियल तो जगन्नाथपुरी में मिलता है।' दुकानदार ने कहा।

लोभी को लगा कि सचमुच वहीं से नारियल खरीदना ज्यादा अच्छा होगा। छह आने की बचत हो जाएगी। दर्शन भी हो जाएंगे। वह कुछ दिन के बाद जगन्नाथपुरी जा पहुँचा।

'भइया नारियल क्या भाव है यहाँ ?'

'दो आने में एक नारियल।'

'एक आने में दे दो न एक नारियल। मैं तो दूर देश से आया हूँ।

'बाबा, तुम तो एक आना कम में मांग रहे हो । यहाँ से देखो- वो रहा नारियल का पेड़ । वहाँ चले जाओ। फोकट में नारियल मिल जाएगा। तुम खुद अच्छा छाँटकर तोड़ लेना।'

लोभी की आँखों में चमक आ गई । नारियल के बगीचे पहुँचकर वह पेड़ पर चढ़ गया ।

जैसे ही नारियल तोड़कर उतरना चाहा, पर उतर न सका। वह काँपने लगा। वह वहीं लटका किसी के आने का इंतजार करने लगा। लोभ क्या-क्या नहीं कराता ? उसके प्राण सूखने लगे। इतने में एक हाथी पर सवार महावत दिखाई दिया। वह उसे पुकारने लगा ।

हाथीवाले के नजदीक आने पर उससे विनती की-'मुझे उतार दो हाथीवाले भाई ! मैं उतर नहीं पा रहा हूँ। मैं तुम्हें

जितना कहोगे उतना रूपया दूँगा।' बात पाँच सौ रुपए में तय हुई। हाथीवाले ने जैसे ही लोभी के पैर पकड़े, हाथी आगे बढ़ गया। अब महावत उसके पैर पकड़कर हवा में झूलने लगा।

वह चीख कर बोला - 'भाई ! हाथ मत छोड़ना ! मैं मर जाऊँगा। जो बोलोगे दूँगा। तुम्हें अब पाँच सौ रुपये भी देने नहीं पड़ेंगे।'

'लोभी दर्द से परेशान था। पर एक हजार रुपए मिल रहे हैं-यह सोचकर उसने और भी कसकर नारियल के पेड़ को पकड़ लिया। अब दोनों पेड़ पर लटके-लटके किसी राहगीर का इन्तजार करने लगे ।

कुछ ही समय बाद एक घुड़सवार वहाँ से गुजरा। महावत की पुकार सुनकर वह नारियल पेड़ के पास आ गया ।

महावत ने गिड़गिड़ाते हुए कहा- 'घुड़सवार भाई ! दो हजार रुपये ले लेना हमें उतार दो।'

'उसने लोभी बाबा से कहा, 'छोड़ना मत भैया ! मैं तुम्हें भी उतार लूँगा !'

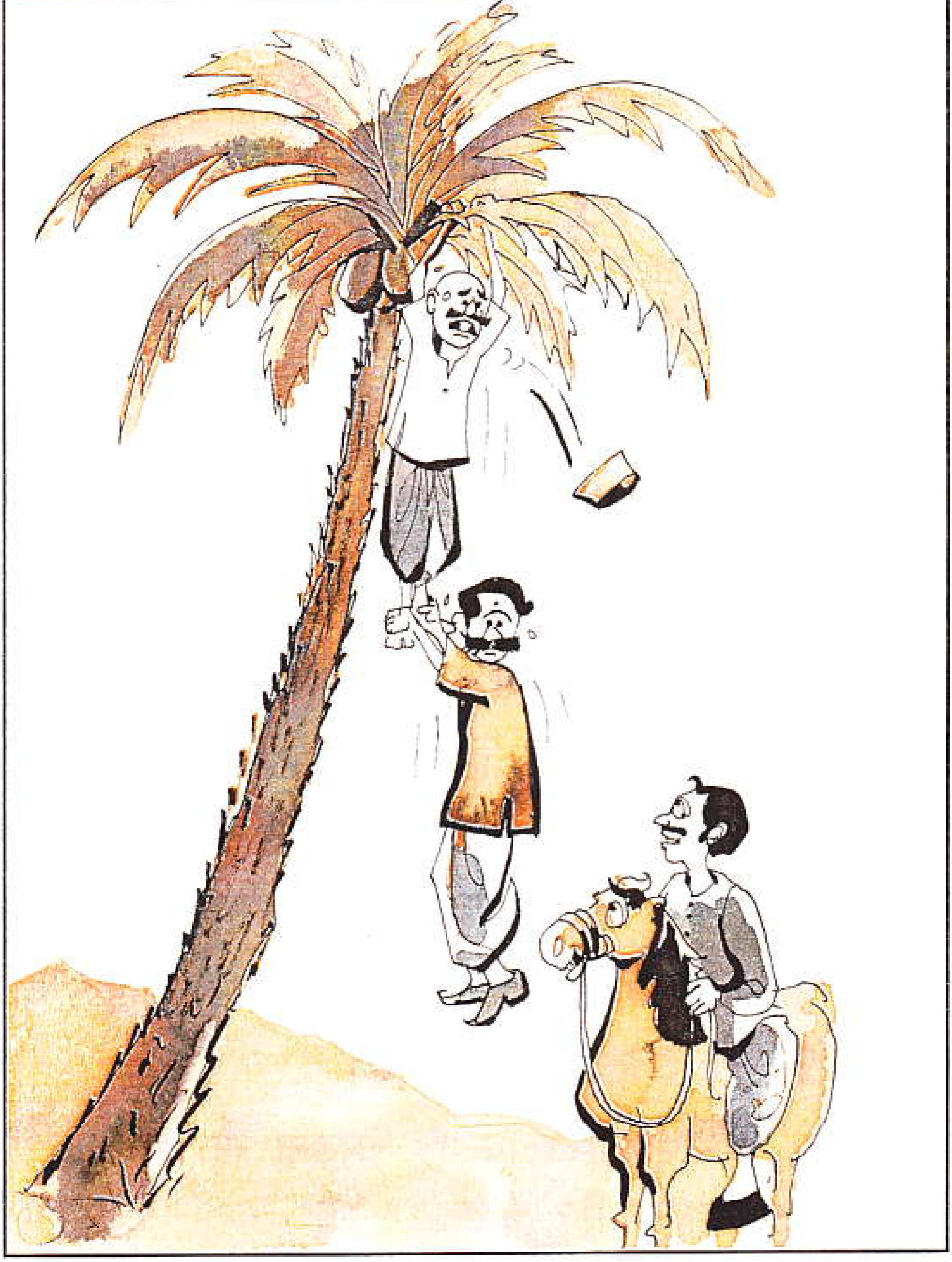

घुड़सवार महावत की बात सुनकर रुक गया। उसने सोचा- थोड़ी सी मेहनत लगेगी और मुझे दो हजार रुपये मिल जाएंगे। वह महावत को उतारने की कोशिश करने लगा। इतने में घोड़ा बिदक गया था। घुड़सवार भी लटक गया। अब घुड़सवार की भी हालत पतली हो रही थी।

उसने विनती के स्वर में कहा- 'महावत भाई ! तुम्हें मैं दो हजार दूँगा और नारियल पकड़कर लटकनेवाले भैया को चार हजार। तुम लोग पेड़ को मत छोड़ना जो जिसे पकड़े हो, कसकर पकड़े रखना।'

लोभी की परेशानी बढ़ गई थी। पर लोभ जो था उसे रुपयों का। वह मन में हिसाब करने लगा-हाथीवाला एक हजार देगा। घोड़ेवाला चार हजार। कुल मिलाकर पाँच हजार रुपये।

'तुम धन्य हो जगन्नाथ स्वामी ! तुमने मुझे इतने सारे रुपये दिला दिए।' कहकर उसने दोनों हाथों को फैला दिया। वह भूल गया कि वह दोनों हाथों से नारियल पकड़कर लटका हुआ है।

बस धड़ाम से वे तीनों धरती पर गिर पड़े। लोभी वहीं मर गया। लोभी का साथ देनेवाले उन दोनों का अन्दाज आप खुद लगा सकते हैं। उनका क्या हुआ होगा?

# चतुरा के चातर

एक हाथी और सियार दोनों मित्र थे। दोनों एक दिन गन्ना खाने गए। दोनों एक खेत में गन्ना खाने लगे। सियार का पेट भरने आया।

वह कहने लगा- 'मितान (मित्र) ! मेरा मन चिल्लाने को मचल रहा है। यदि नहीं चिल्लाऊँगा तो मेरा पेट फट जाएगा।'

'ये क्या मितान? मेरा पेट क्या, पेट का तो पैंदा भी नहीं भरा है ! तुम जरा देर से चिल्लाना। 'हाथी ने विनम्रता से कहा।

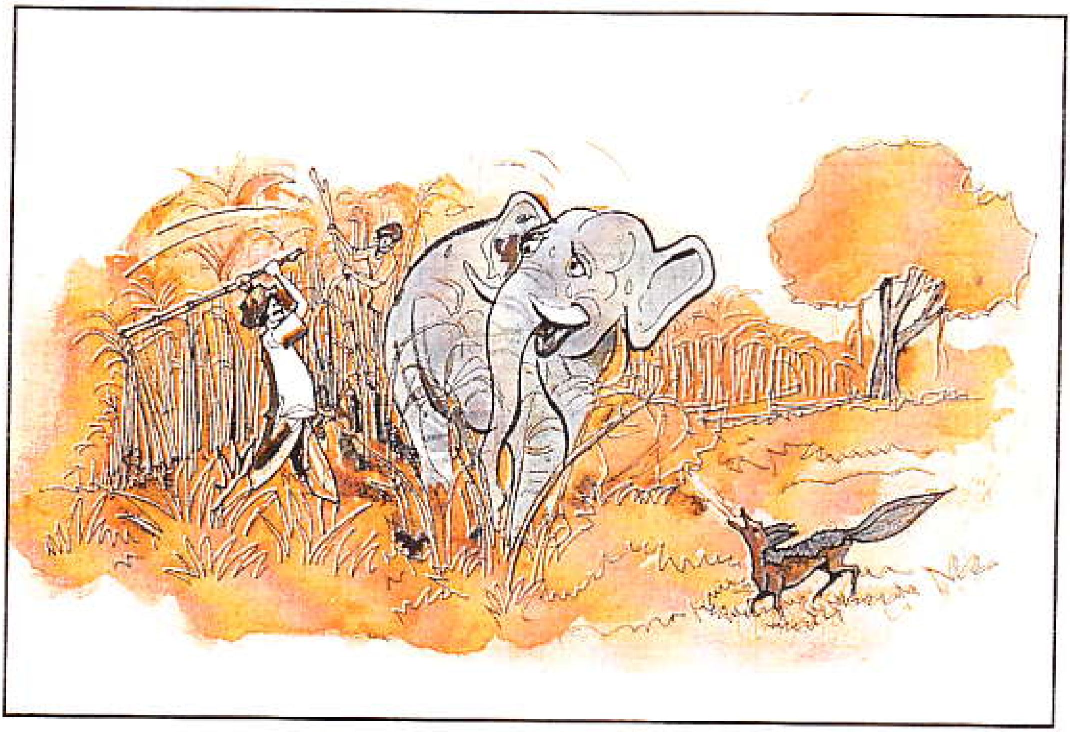

सियार नहीं माना। जोर से 'हुँआ हुँआ' चिल्लाने लगा। हाथी बोला- 'चुप हो जा सियार चतुर।' इतने में खेत का मालिक आ गया। वह लाठी लेकर दौड़ा। सियार भाग खड़ा हुआ। हाथी भाग नहीं सका। उसकी खूब पिटाई हुई।

कुछ दिन बाद फिर दोनों की भेंट हो गई। हाथी ने सियार का स्वागत करते हुए कहा-'मितान, मैंने पास में एक खेत देखा है। वहाँ खरबूजे की लहलहाती फसल है। पास में एक नदी भी है। खूब खरबूजे खाएँगे और नदी का पानी भी जी-भरकर पीएँगे।'

दोनों चल पड़े। नदी देखकर सियार ने मुस्कुराते हुए हाथी से कहा- 'मुझे पीठ पर चढ़ा लो न।' हाथी को मौका मिल गया। सियार, हाथी की पीठ के ऊपर जा बैठा। नदी के बीच पहुँचते ही हाथी खड़ा हो गया।

'क्या है मितान? क्यों ठिठक गए?' सियार ने शंकित होकर पूछा।

'मितान! मुझे पानी में लुढ़कने की इच्छा हो रही है। फिर इतना गहरा पानी जीवन में पहली बार मिला है।' हाथी ने मुस्कुराते हुए कहा।

सियार काँप उठा, 'ये क्या मितान! मुझे उस पार तो पहुँचा दो । फिर चाहे जितना लुढ़कना चाहो, लुढ़क लेना, नहीं तो मैं तो निपट जाऊँगा।'

पर हाथी नहीं माना। वह पानी में लुढ़क गया। सियार तेज धार में बह गया। इसलिए ही कहा गया है- 'चतुरा के चातर।'

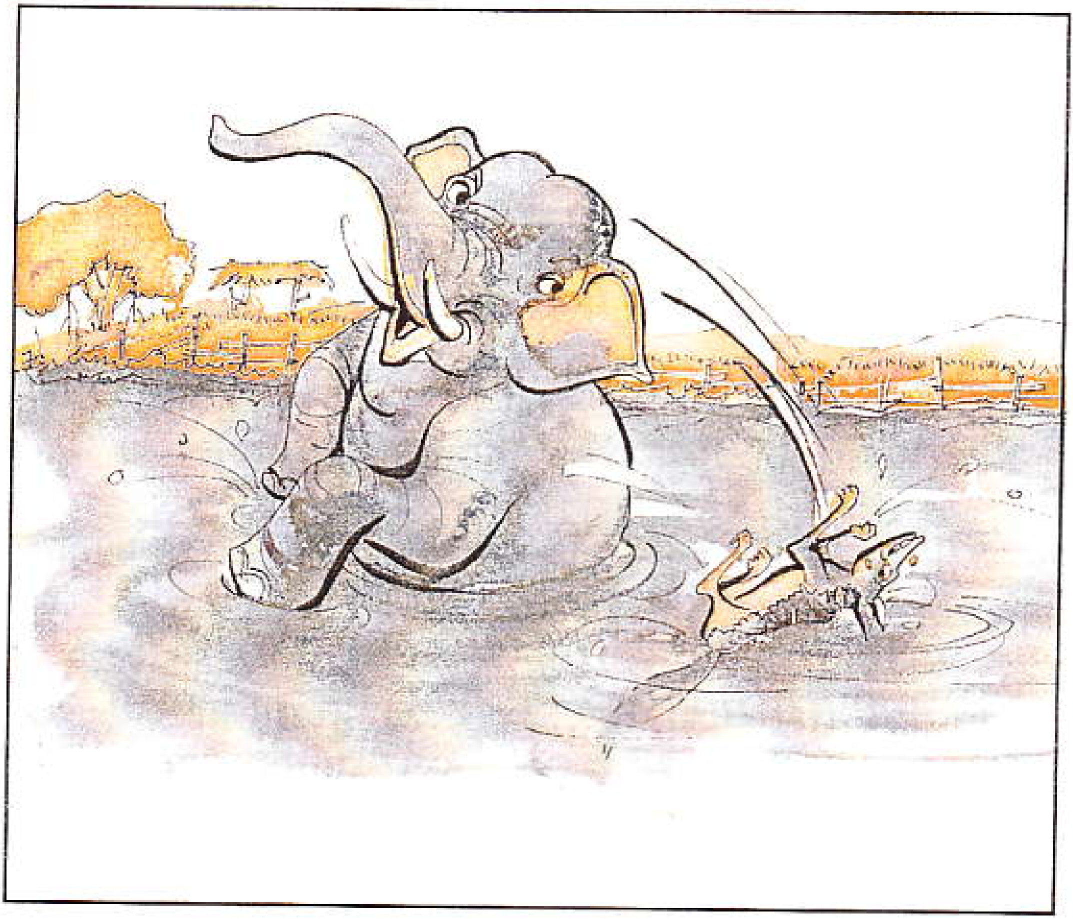

## हमारे प्रकाशन

- श्रेष्ठ कौन 7.00
- रोटी का सवाल 7.00
- मन का चोर 9.00
- कजरी 8.00
- रोबोट 8.00
- छत्तीसगढ़ की लोककथाएं 9.00
- कटौती में गंगा 8.00
- सच्ची प्रार्थना 8.00
- दो कुओं की कहानी 9.00
- सहोदरा 9.00
- सच्ची तीर्थ यात्रा 10.00
- चिंगारी 8.00
- संत कबीरदास व संत सिंगाजी 9.00
- संत रविदास 8.00
- मीराबाई 8.00
- गोस्वामी तुलसीदास 8.00
- नया जन्म 8.00
- सच्चा न्याय 8.00
- सूरदास 9.00
- गुरू नानकदेव 10.00
- लाले का उस्ताद 8.00
- निमाड़ी लोककथाएँ 9.00
- झूठ की सजा 8.00
- गौतम बुद्ध 9.00
- महावीर स्वामी 9.00
- ईसा मसीह 9.00
- वाणी का कमाल 8.00
- मंगू का सपना 7.00
- कमजोरी का स्वयंवर 9.00
- नैतिक कथाएँ भाग 1 8.50
- नैतिक कथाएँ भाग 2 8.00
- मानव धर्म 9.00
- सुनो कहानी 8.50
- सुनहरा नेवला 7.00
- जैसी करनी वैसी भरनी 9.00
- बीरबल की चतुराई 8.00

प्रकाशक

राज्य संसाधन केन्द्र, प्रौढ़ शिक्षा

भारतीय ग्रामीण महिला संघ, इन्दौर, म.प्र.

महालक्ष्मीनगर, सेक्टर आर, इन्दौर-452 010 (म.प्र.)

फोन 2551917, 2574104 फैक्स 0731-2551573

मुद्रक - सिद्धार्थ ऑफसेट, इन्दौर- 9 फोन - 0731-2493745